

Inhalt

| | |
|--|----|
| Vorwort | 7 |
| „Der Pillenknick kommt in die Jahre!“ | |
| | |
| Tamara Hinz | 11 |
| „Heute weiß ich's besser“ | |
| | |
| Uwe Heimowski | 23 |
| Mittendrin – und schon ein bisschen weiter | |
| | |
| Michael Diener | 35 |
| „Nomen est Omen“ | |
| | |
| Doro Zachmann | 47 |
| „Ich will das Leben als Fest feiern“ | |
| | |
| Katrin Schäder | 57 |
| Neugierig bleiben, Neues probieren, das Leben genießen | |
| | |
| Martin Gundlach | 67 |
| „Ich liebe meinen ganz normalen Alltag!“ | |
| | |
| Martin Dreyer | 77 |
| Alles ein Geschenk | |

| | |
|---|-----|
| Christoph Möller | 89 |
| Zwischen „No future!“-Punk und „Jesus lebt!“ | |
| | |
| Ute Sinn | 103 |
| „Ich freue mich sehr an meinem Leben!“ | |
| | |
| Reinhard Spincke | 113 |
| „Mutig die Dinge anpacken, die Gott mir vor die Füße legt“ | |
| | |
| Kerstin Wendel | 125 |
| Lust auf Leben | |
| | |
| Hanspeter Hugentobler | 137 |
| Angekommen, wo ich hingehöre | |
| | |
| Anke Kallauch | 147 |
| Gut investierte Zeit | |
| | |
| Torsten Hebel | 155 |
| Der Traum ist noch lebendig | |